

श्री जैन सत्य प्रकाश

(मासिक पत्र)

विषय-दर्शन

१ श्री सरस्वती विशिका	: आचार्य महाराज श्रीमद् विजयपद्मसूरिजी	: ५११
२ समीक्षामाविष्करण	: आचार्य महाराज श्रीमद् विजयलावण्यसूरिजी	: ५१३
३ श्रीशंखेश्वरपार्श्वनाथ स्तोत्रम्	: मुनिराज श्री वाचस्पतिविजयजी	: ५१६
४ दिगंबर ज्ञान कैसे बने ?	: मुनिराज श्री दर्शनविजयजी	: ५१७
५ सर्वमान्य धर्म	: आचार्य महाराज श्रीमद् सागरानन्दसूरिजी	: ५१९
६ सहेट महेट	: मुनिराज श्री दर्शनविजयजी	: ५२६
७ आहोमेर	: स्व. मुनिराज श्री हिमांशुविजयजी	: ५२७
८ गुणराननी जैनश्रित उणा	: श्रीयुत साराभाई मणिलाल नवाभ	: ५३१
९ "जैनदर्शन"ने उत्तर	: आचार्य महाराज श्रीमद् सागरानन्दसूरिजी	: ५३५
१० अक्षय तृतीया	: आचार्य महाराज श्रीमद् विजयपद्मसूरिजी	: ५३८
१० पुरातन धतिहास अने स्थापत्य		
प्रचीन लेख संग्रह	: मुनिराज श्री जयंतविजयजी	: ५४३
१२ छत्तप्रायः जैनग्रन्थों की सूची	: श्रीयुत अमरचन्दजी नाहटा	: ५४७
समाचार :		पृष्ठ ५५० नी आगे

सूचना—परम पूज्य आचार्य महाराज श्री सागरानन्दसूरिजी महाराजने "द्विगंधरेनी उत्पत्ति" शीर्षक यादु लेख, तथा परम पूज्य आचार्य महाराज श्री विजयलक्ष्मिसूरिजी महाराजने "प्रभु श्री महावीरजं तत्त्वज्ञान" शीर्षक यादु लेख आ अंकमां आपी शक्यो नथी.

: विज्ञापित :	वार्षिक लवाणमः	: ज्ञेयं छे
जे पूज्य मुनिराजने "श्री जैन सत्य प्रकाश" मोडलवामां आवं छे, तज्जे पोतावा विहारादिकना कारणे अहलातुं अरनामुं हरेक महिनाती सुदी त्रीण पहिलां अमने लभी जलाववा कृपा करती, जेथी मासिक जेवहसे न जतां, वषतअर मणी शके.	स्थानिक १-८-० अदारगामनुं २-०-० छुटक अंक ०-३-०	श्री 'जैन सत्य प्रकाश' ना प्रथम वर्षना २, ३, ७, ८, अंकानी जउर छे. जेओ ते मोडलशे तेने सासार स्वीकार करीने अहवामां तेदना अंको मजरे आपवामां आवशे.

मुद्रक अने प्रकाशक: श्रीमन्नाल गोडणनास शाह, मण्णि मुद्रणाथ, डाणपुर, अजुरीनी पोण, अमदावाद.

प्रकाशन स्थान: श्री जैनधर्म सत्यप्रकाशक समिति कार्यालय, जेशिंगलभार्नी वाडी, धीडांटा, अमदावाद.